

29/6/23

Page \_\_\_\_\_

## बालगार्बिन भगत

प्र०-१ छतीबाड़ी से जुड़ी गृहस्थ बालगार्बिन भगत अपनी  
किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे। प्र.  
उल्लर → बालगार्बिन भगत छती-बाड़ी से जुड़े गृहस्थ थे,  
फिर भी वे साधु की श्रमी में आते थे और  
(i) वे कवीर को अपना साहब मानते थे।  
(ii) वे कवीर के पदों को ही गाते थे और उनके  
उन्नादशों पर चलते थे।  
(iii) वे इश्वरी से छरा अवधार रखते थे, वे हृषि  
बात करने में न कही संकोच करते थे और वे  
ही किसी से इंगित नहीं देते।  
(iv) वे अन्य किसी की चीज़ का बिना घुसे  
अवधार में नहीं लाते थे।  
(v) वे एक प्रत्येक वस्तु पर साहब का अधिकार  
मानते थे।  
इस प्रकार याम की प्रवृत्ति और साधुता  
का अवधार उन्हें साधु की श्रमी में छढ़ा कर  
देता है।

प्र०-२ भगत की पुत्रवद्धु उन्हें कलेक्टर बोने नहीं छोड़ना चाहती है।  
उल्लर → भगत के पुत्र की मौत से जाह्नवी पतोड़ी अभी  
शोष जीवन भगत की स्त्री करने हुए विताना  
चाहती थी। वह भगत को उन्हें छोड़ना नहीं  
चाहती थी। वह जानती थी कि-

- (i) उतार्ध में भगत को कैसे भाजन करासकार?
- (ii) पुत्र की मृत्यु छोन से घर में उन्हें कैसे  
रहांगे?

(iii) बीमार पड़ने पर कैसे वानी देखा और कैसे  
साहसरा होता।

इस प्रकार उन्हें भगत की पुत्रवद्धु उन्हें

साहर बनकर वही विद्युत का जीवन काटना  
चाहती थी।

अपनी

गत घे?

प्र०-३) भगत ने आपने वही की मृत्यु पर उपनी भावना  
किस तरह व्यक्त की?

पाठी -

उत्तर → भगत ने इस अकार अपनी भावनाएँ व्यक्त की-

(i) मरे हुए पुत्र को आगने से चराई पर ~~देखते~~

(ii) मृतक पुत्र के ऊंपर छुल और तुलसी के

पले विष्वर दिसे और सिंहशान सक दीपक  
~~जलाकर~~ रख दिया,

(iii) पुत्र के पास आसन पर बैठकर हमेशा की  
तरह कबीर के पदों को गाने लगे और आपने  
पुत्र ~~की~~ बड़े से समझाने लगे कि उत्तमा-  
परमात्मा से मिल गई हूँ।

(iv) पत्नी को समझाने पर समय रोने का नहीं  
उत्तर मिला का है,

तर

प्र०-४) भगत के व्यक्तित्व और उनकी वृश्णुपा का उनको  
शब्दों में वरित्र प्रस्तुत कीजिए।

प्र०-५)

उत्तर → साठ वर्ष के भगत रुकामी गाड़ विद्ये और  
मृद्गोले कद के व्यक्ति वे जिनके बाल पक्के हुए  
थे उनका चौहरा हमेशा सकें बालों से जगाना  
तो रहा था किंतु साथुओं की रक्षा के बारे  
भूत बाल नहीं रक्षते थे। वे कभी कहाँ पड़ने  
कर्मों के नाम पर उनकी कमर में रहायी और  
सिर पर ~~कीरि~~ ~~पंचियों~~ जैसी ~~बाल~~ ढाई  
ढाई थी। उन्होंने के दिनों में काली कमल  
आदें रहते थे। ~~वही~~ माघे दिन रामानंदी रेत  
लगा रहती हूँ। गले में कमरी की बड़ी बड़ी बड़ी  
बड़ी रहती थी। इस रक्षा पर साथुओं पर

उत्तमा जीवन आर्द्ध साधुता

(ii) अरा इहता था।

प्र०-५ बालगोविन भगत की दिनचर्या लोगों के असरज का करता हुआ थी?

उत्तर→ बालगोविन भगत की दिनचर्या का प्रभाव कार्य आश्चर्यजनक दृष्टा था। उत्तर-

(i) मृदस्त जीवन में इहत हुस्त ३०८० साधुता करने नहीं छोड़ा।

(ii) शूल कर भी दूसरे की वस्तु लिना बढ़े प्रयोग नहीं करते थे।

(iii) भौंर में ही निष्पत्ति में भी दूर जानकर नहीं स्वास्थ्य कर लेता। उम्हा की तरह दिनचर्या में था। ~~जल्दी खाएं~~ भी इरादत्रय में नहीं में जानकर पांचवर पर हेतु लगाते ~~देखते~~ देखकर लोगों को हुरानी होती थी।

(iv) दैनिक किटकिटाने वाली ढंक में हेतु लगाते, खेड़ी लजाते सामाय उनके माथे से अम लिन्द चमक उठते थे।

(v) उपवास राजकर चेहरे ही तीस कोस दूर ~~मारा~~ स्वास्थ्य कर लाते थे और रास्ते में लोगों की जाकर घार लाते थे।

(vi) मरणासर्व-नियोग में भी ~~बही~~ बही जबानी वाले आवाज बही नियम लोगों को अवास्था किए लिना नहीं रहते थे।

प्र०-६ पाठ के आधार पर बालगोविन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर→ बालगोविन भगत के मधुर गायन की विशेषता पह यी के कवीर के सीधे-साथ पद जल कर्ता ने निकलकर क्षम स्त्रीवा तो उठाते थे, जो-

सुनकर लगा, वह, उपरे वह मंत्रमुण्डा को जाते हो कि वह झूम रखे उठते हो, उपरे के आठ स्वराविक सूप से कैफवन लगते हो। इन चलते हुए किसान के परे विशेष क्रम ताल हो उठते हो, उनके संगीत की ध्वनी तरंगी लगती हो दृक्षत कर देती ही, उनके संगीत इसे रोका लगता हो कि स्वर की एक तरंग स्वरी की ओर जा रही है तो दूसरी तरंग लगती हो की आदि।

प्र०-७ → यह मानिक प्रसंगों के आधार पर पह दिखाई देता है कि बलगाविन मानते प्रचलित ~~मान्यताओं~~ मानान्यक मान्यताओं को नहीं मानते हो, पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।  
 ३०२ → बलगाविन मानते प्रचलित मान्यताओं पर विशेष नहीं कहते हो, इसे ~~उदाहरण~~ उदाहरण जीवन में अलेक्ट्रोन फोटो फिल्म पर प्रसंग उस प्रकार है—

(i) मृतक पुत्र की छापिता में ~~छाप~~ पुत्रवधु जै जाग दिलवाकर उस समाजिक परम्परा को बड़ी साहस में नकार देता है, जो स्त्रियों का रामराज्य पर जाना निषेध मानती है।

(ii) विद्यवा नारी के पाते लगती हो कि प्राचीन धारणा यह ही कि विद्यवा का पुनर्विवाह व्यारमिक परंपरा के विरुद्ध है, जिसे उदाहरण बड़ी सख्तता आदि हटता से नकार दिया और पत्नी के ~~छिपेले~~ पुनर्विवाह का आदेश दे दिया।

(iii) वे मालुओं व द्वारा भेदा मांगकर घोषन की परम्परा के विशेषी हैं।



प्र०-४ धान की चपड़ के समय माला को भगत की तरह लड़रियों के समै चमकत कर देती थी? ३२  
माला का शब्द चेत पर लिखा।

प्र०-५ → अशाह मास की रिमाइंग वर्षा, आकाश में बाल, शब्द देखी धुवाई हवा के बीच देती से कान को छुकूत कर देते बाली स्वर लड़रियों सुनाई देती थी।

(i) स्वर कान में पड़ते ही पर्णी में जलते हुए बाल  
झूम तेल, जल की में पर कला लेते थे वे  
दुई अंगों के बीच आपने आपने दी र-वशावेक  
स्वर से कंपन करते लगते।

(ii) जलते में उस घास के लिए साथी के द्वारा सुना गया

(iii) शपनी करते और की कुंगलियाँ बिशेष कर्म  
में ढोते लगते।

(iv) शपनी करते और की कुंगलियाँ बिशेष कर्म

## उपनी ३१२ अभियोग्य

प्र०-६ → पाठ के आधार पर लतार्य के बालगावेक भगत की  
कलीर पर छेद्या किन - किन रूप से पकड़ दिए? ३३  
उपनी → (i) भगत द्वारा दूर सौंदर्य कलीर दंडी उड़ापी लगती  
थी जो कलावटी पर जाती थी,

(ii) वे कलीर के रखित लड़ा को ही गाते थे ३१२ ३४  
पर लतार्य ३-१६२०८८ पर चलते थे,

(iii) लती ~~बारी~~ बारी में जो कुछ पढ़ा दाता उसे पहले कलीर  
के हरारे में डूँगे करते थे ३१२ वहाँ में जो  
प्रसाद रूप में भास दाता था उसी से जीवन  
लिवहि करते थे।

(iv) भगत पर कलीर की विचारधारा का दिना-  
भगवान था कि ३४१ की तरह शैदियों का

## विरोध करते हैं।

प्र०-१० → “उन्नापनी” इसके में भगत की कलीर पर अगाह  
शहदा के बया कारण ऐसे होते हैं।  
उन्नरेंगी, कलीर के साथ जीवन से भगत काफी प्रभावित  
हुए होते, याकि कलीर भी भगत जीवन में इसे हुए  
साथ दे।

- (ii) कलीर की आदम्बरों में कोई रुची नहीं थी। उन्होंने आदर्शी
- (iii) कलीर की तरफ दी गयात्री भी अपने प्रबोध में  
छोड़ा जा रखते हैं।
- (iv) कलीर सोमाजिक कुरितियों का विरोध करते हैं ले  
भगत को भी कुरितियाँ छोड़ती हैं और उन्हीं  
नहीं लगती थीं।

प्र०-११ → “उपर की तरफी से यह भी माना जाता है  
बाल्मीकिन भगत के साथ थे।” या, “साथ” की पद्धति  
उन्हें पहनावे के आदार पर की जानी चाहिए? आप किसने  
आदारों पर यह सुनिश्चित करेंगे कि समुक्त व्यक्ति साथ है।

उन्नर → आज रमावगत साथुओं की पद्धति करना कठिन है।  
पहनावा भाजे से हुआ किसी व्यक्ति को साथ नहीं  
मान सकते हैं। माना साथ नहीं हो।

- (i) इसके बहुत से कामी से व्यक्ति जो साथ नहीं हैं।
- (ii) कर्म भी परापरकार की भावना से भरा होता है।
- (iii) बहारी दिलाको से हुए शीघ्रा सख्त रमावगत होता है।
- (iv) उपदेशात्मक जीवन में ऐसे अपेक्षा दूसरों के करना  
है जैसा ही आनंदण से नहीं है।
- (v) लाला तारे जारी से हुए त्याग से हुए जीवन  
होता है।

2/5/23

प्र०-३ मोट और प्रेम में अंत होता है। भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर इस कथन का सच सिद्ध करें?

उत्तर- मोट और में व्यक्ति किंवद्वयविमुद्द होता है। इसके उत्तर मोट में साल्लोकता होती है, वह किसी विपरीत प्रभा में सार्वजनिक सम्पर्क होता है के बोले हो सकता है। प्रेम सार्वजनिक सम्पर्क होता है। इसमें स्वार्थ नहीं आपेक्षा अपने का दित चिह्न। इसमें सार्वजनिक सम्पर्क जीवन के साधारण पर अधिक होता है। इसे भगत के जीवन के साधारण पर अधिक होता है। इस सकला जा सकता है-

(i) भगत को अपने ही से प्रेम है, मोट नहीं। याकि वे वह की मृत्यु पर ऐसे मोटी व्यक्ति की तरह विवाह नहीं करते हैं आपेक्षा उनका ध्येय पुत्र हुस सांसारिक व्यवहार में मुख्य हुआ सोनभार गीत गाते हैं कि आत्मा परमात्मा के मिल गई। यह वो उनके ध्येय के लिए प्रसन्नता की वात है।

(ii) पुत्र की मृत्यु पर उनकी पुत्र का वद्य और अपने दुष्टों के सुखकर्ता मोट होता है के कभी भी अपनी पुत्र का भाई के साथ हो जाता है। डायन आत्मा के दित के लिए उनका प्रेम भवन हो जाता है। और उसे माउन भी लिया। यह उनके प्रभा की पराकारा ही।

प्र०-४ गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश ३/१५/१८  
चढ़ते ही उल्लास से बोँ भर जाता है?

उत्तर- गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश उनाषाठ चढ़ते ही उल्लास से इसलिए भर जाता है याकि उनाषाठ के मध्ये में बरसात आरंभ हो जाती है। बरसात की रिमड़ी लौटी, बचे, लौटी जी-पुस्त में ऐसा नया जीवा जो उम्रों पर देती है। सभी अपने-अपने जीवों में जान की रौपाई में लग

जाते हैं। स्त्रियाँ इत्तले जगह लगानी हैं। स्त्री पुरुष  
जाते हैं। विदेशी लोगों का अनुभव है।

कृष्ण

किसी

होता है।

72 42

कपाकि

तरड़

पुत्र

मानसिर

दृढ़ि।

वृ

अपने

अपनी

अपना

उपर्युक्त

उपर्युक्त